International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

सतत् व निरन्तर विकास के प्रति बी.एड. स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ. आरती गुप्ता[1], प्रियांषी कँवर[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,जयपुर
[2]बी.एड. एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश :–

मानव अपने दैनिक जीवन के प्रत्येक क्रियाकलापों के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर है। अपने दिनचर्या में प्रातः उठने से रात्रि तक वह जो भोजन करता है, वस्त्र पहनता है तथा पेय जीता है। वह सभी पर्यावरण से प्राप्त होते है। कार्य करने के लिए आवश्यक ऊर्जा के लिए भी मानव पर्यावरण पर निर्भर है। 1983 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ब्रण्डटलैण्ड की अध्यक्षता में पर्यावरण व विकास पर विश्व आयोग की स्थापना की। आयोग की रिपोर्ट 1987 में 'आवर कॉमन फ्यूचर' के नाम से प्रकाशित हुई। इससे विकास की एक नई परिभाषा दी गई जिसमें विकास को पर्यावरण संरक्षण बनाने की बात कही गयी। इसलिए इसमें एक नये शब्द 'सतत् विकास' का नामकरण हुआ। इसका तात्पर्य है कि हम ऐसा विकास करें जो आज की पीढ़ी की आवश्यकता के साथ–साथ आगे आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं की भी ध्यान में रखे। इसमें इस बात पर भी जोर दिया गया कि विश्व के गरीब लोगों की आवश्यकताओं को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथी ही इसमें सीमितता का विचार भी दिया गया। जिसका तात्पर्य था कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एक सीमा तक ही किया जाना चाहिए ताकि उनसे वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सके।

प्रस्तावना :–

प्रकृति में परिवर्तन होते रहते है जिनका प्रभाव जीवों पर पड़ता है यदि प्रकृति में परिवर्तन प्राकृतिक गति से होते है तो जीव और उनकी प्रजातियों परिस्थि.धतियों के अनुरूप गुण विकसित करके सन्तुलन स्थापित करने मे सफल हो जाती है, किन्तु यदि परिवर्तन मानव निर्मित कारणों से होता है तो उसकी गति अस्वाभावित होती है और जीवों को उसी गति से नए गुणों का विकास करना कठिन हो जाता है। इस परिस्थिति में प्रकृति अपना सन्तुलन रखने में असमर्थ हो जाती है। मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए तथा उनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए एक ओर तो हमें अन्न, वस्त्र, मकान, चारों और ईंधन की अधिक मात्रा में व्यवस्था करनी पड़ रही है तथा औद्योगिक प्रक्रिया को तेज करना पड़ रहा है तो दूसरी ओर राष्ट्रों के मध्य अपनी–अपनी प्रसुसप्ता बनाए रखने की होड़ में परमाणु अस्त्रों का अनियंत्रित विकास हो रहा है।

मानव की शारीरिक रचना तथा बौद्धिक क्षमता अन्य जीवों की तुलना में अधिक विकसित है। वह अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप प्राकृतिक वातारण का चुनाव करता है। पर्यावरण का उपयोग कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मनुष्य अपने निरन्तर बढ़ती जनसंख्या में भौतिक जीवन स्तर में उत्थान के लिए पर्यावरण अधिक संसाधनों का दोहन एवं अपशिष्ट पदार्थो का सर्जन करता है। संसाधनों की क्षति कारक उपयोग पर रोक लगाना तथा भावी उपयोग हेतु संसाधनों की बचत एवं उनका निवेश करना। आयोग ने पर्यावरणीय तथा आर्थिक निर्णयों के एकीकरण पर भी जोर दिया। यह भी कहा गया कि गरीबी से भरे संसार में स्वस्थ पर्यावरण सम्भव नहीं है क्योंकि गरीबी के कारण लोगों को पर्यावरण विनाशी क्रियायें करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। सतत् विकास के लिए रियो 1992 में एक सम्मलेन हुआ। सम्मेलन में कुछ सिद्धान्त पर सहमति बनी। इन सिद्धान्तों में प्राकृतिक संसाधनों पर राष्ट्रीय संप्रभुता तथा राज्यों के बीच आपसी सहयोग पर जोर दिया गया। इसके मुख्य बिन्दु थेः–सतत् विकास के कुछ दुरगामी तथा व्यापक उद्देश्य है जो जाति, धर्म, भाषा तथा क्षेत्रीय बंधनों से मुक्त है। जैसे–पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयो से बचाना। ऐसी वैज्ञानिक

तकनीकी का विकास करना जो प्रकृति के नियमों के अनुरूप कार्य करें। विविधता की रक्षा करना तथा विकास की नीतियों में स्थानीय समुदायों को शामिल करना। शासन की संस्थाओं का विकेन्द्रीकरण करना और उन्हें अधिक लचीला, पारदर्शी तथा जनता के प्रति उत्तरदायी बनाना। ऐसी योजनाओं का निर्माण करना जो निर्धन देशों की आवश्यकताओं को समझकर बिना उनके पर्यावरण नष्ट किये उनके विकास में मदद करे। सतत् विकास ैक्व4 प्राप्त करने के शिक्षा आवश्यक ज्ञान व कौशल को बढ़ावा देती है। यह आर्थिक कल्याण सामाजिक समानता, लोकतांत्रिक मूल्यों और बहुत सी चीजों को प्रोत्साहन करती है।

समस्या का औचित्यः–

सभी शोध कार्य के लिए समस्या का चयन करना महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का सर्वांगीण विकास हेतु सतत् विकास के लिए शिक्षा की हमारे जीवन शैली और व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका उद्देश्य है समावेशी तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने का अवसरों को बढ़ावा देना।

सतत् विकास का उद्देश्य है प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना क्योंकि बढ़ती जनसंख्या में मानव के शिक्षा के कारण संसाधनों को अधिक उपयोग के साथ–साथ दुरूपयोग भी किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप भविष्य में उपयोग के लिए संसाधन खत्म हो जाएंगे और आने वाली पीढ़ी और भी गम्भीर समस्या को झेलना पड़ सकता है तो हमें सतत् विकास के प्रति अधिक जागरूक करना ताकि उपयोगी संसाधन को खत्म ना हो। सतत् विकास के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सतत् भविष्य के लिए समाज में परिवर्तन करना है। वह शिक्षा जो भविष्य के लिए सुरक्षा प्रदान करती है। वह सतत् विकास के लिए शिक्षा है। वह शिक्षा जो सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगा। सतत् विकास के लिए शिक्षा है वह शिक्षा जो सतत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगा। वह सतत् विकास के लिए शोधकर्ता द्वारा सतत् व निरन्तर विकास हेतु बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि भविष्य ही शिक्षक है।

सम्बन्धित साहित्य :–

(1) **सरिता शर्मा (2022)** भावी शिक्षकों के सतत् विकास के लिए जीवन कौशल का आकलन। उद्देश्य बी.एड. के भावी शिक्षकों के सतत् विकास के लिए जीवन कौशल के स्तर का आकलन का अध्ययन। निष्कर्ष एकत्रित आंकड़ों के विस्तृत विश्लेषण और व्याख्या के बाद पाया गया कि जीवन कौशल प्रतिक्रियाओं और महत्पूर्ण कौशल और निर्णय लेने के कौशल बी.एड. के संबंध में भावी शिक्षक के स्तर के बीच में कोई महत्वपूर्ण नहीं है। शिक्षा प्रशिक्षण प्रशिक्षकों के पास डी.एल.एड. की तुलना में बेहतर कौशल स्तर उत्तरदाताओं की परिपक्वता स्तर और शैक्षिक योग्यता अलग–अलग है और इसका प्रभावी भी उसकी आलोचनात्मक सोच ओर निर्णय लेने के कौशल पर पड़ता है। आमतौर पर यह दावा किया गया है कि किशोरावस्था के दौरान अमूर्त में तर्क और सत्यात्मक तर्क क्षमता बढ़ती है मैं देखा गया कि बी.एड. एवं डी.एल.एड. की तुलना में शिक्षक प्रशिक्षण आलोचनात्मक सोच में निर्णय लेने के कौशल में बेहतर है और शिक्षक पर प्रशिक्षुओं को उनके उच्च परिपक्वता स्तर व शैक्षिक योग्यता के कारण।

2. **जुबली पादनाभन (2011)** सतत् विकास के लिए शिक्षा एकीकृत दृष्टिकोण है इसकी प्रभावशीलता का अध्ययन। उद्देश्यः– सतत् विकास के लिए एकीकरण दृष्टिकोण अपनाने वाले छात्रों की भागीदारी और प्रदुषण कौशल का निरीक्षण करना। निष्कर्षः–अधिकांश छात्र शिक्षकों के पास सतत् विकास के संबंध में पर्याप्त जागरूकता और ज्ञान ही नहीं है जबकि अधिकांश शिक्षकों पर शिक्षकों के पास सतत् विकास के बारे में बुनियादी जागरूकता है हालांकि पर्याप्त बुनियादी ज्ञान की कमी उनकी प्रतिक्रिया से स्पष्ट हो चुकी है। विषय में योग्यता शिक्षकों के लिए प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है इसके लिए ऐसी बढ़ाओं को खारिज नहीं किया जा सकता। काफी संख्या में छात्र शिक्षक सतत् विकास की शिक्षा के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने में छात्रों के भागीदारी एवं प्रदर्शन कौशल विकास किया जाए उसके लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना अनिवार्य है।

3. **गुप्ता (2007)** सतत् विकास के लिए शिक्षा भारतीय शिक्षकों की अवधारणा एवं उनकेप्रति उनकी समझ का अध्ययन किया। उद्देश्य सतत् विकास के लिए शिक्षा भारतीय शिक्षकों की अवधारणा के प्रति समझ का अध्ययन। निष्कर्ष इन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षकों को सतत् विकास के लिए और अधिक

प्रोत्साहित एवं संगठन किया जाए वह अपने शिक्षकों को और अधिक नवीन एवं सृजनात्मक बनाने का प्रयास करें। सतत् विकास के लिए शिक्षा केवल स्कूल पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के सफल नहीं हो सकती है। इसके लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होना अनिवार्य है।

4. **वी.एस. मल्होत्रा (2015)** भारतीय परिपेक्ष्य में विद्यालय में सतत् विकास के लिए शिक्षा का अध्ययन। उद्देश्य विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सतत् विकास के लिए शिक्षा की जागरूकता का अध्ययन। निष्कर्ष सतत् विकास के लिए शिक्षा में स्थानीय स्तर पर आवश्यक प्रशिक्षण आवश्यक है। विद्यार्थियों को यह अनुभव करवाना होगा कि वह भी इस समस्या का एक भाग है। इसके समाधान के लिए उसका योगदान भी अनिवार्य है।

5. **ममता असवाल (उत्तराखण्ड) 2017** सतत् विकास के लिए शिक्षा हेुत छात्र अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण मैन्युअल का निर्माण। उद्देश्य आवश्यकता विश्लेषण के आधार पर छात्र अध्यंयन के लिए एक प्रशिक्षण मैन्युअल का निर्माण करना। निष्कर्ष सतत् विकास के लिए शिक्षा सक्रिय शिक्षक एक अधिगम की आवश्यकता है। जागरूकता के आधार पर यह निष्कर्ष निकलकर आया कि सरकारी एवं वित्तपोषित बी.एड. संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों के जागरूकता स्टार में कोई अन्तर नहीं है। छात्र अध्यापों को सतत् विकास जीवन शैली जीने में रूचि है।

साहित्य विवेचना :–

प्रस्तुत शोध में द्वितीय भाषा के रूप में सतत् व निरन्तर विकास के प्रति बी.एड. स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययनकरना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –**सरिता शर्मा (2022), जुबली पादनाभन (2011), गुप्ता (2007), वी.एस. मल्होत्रा (2015), ममता असवाल (उत्तराखण्ड) 2017** अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में बी.एड. स्तर के प्रषिक्षणार्थियों के विकास एवं जागरूकता हेतु अनेक शोध अध्ययन किये गये है। परन्तु सतत् व निरन्तर विकास के प्रति बी.एड. स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता प्रति सन्तोषजनक परिणाम उपलब्ध नहीं है इसलिए सतत् व निरन्तर विकास के प्रति बी.एड. स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन नामक शीर्षक रूप में समस्या का चयन किया गया है।

समस्या का कथनः–

सतत् व निरन्तर विकास के प्रति बी.एड. स्तर के प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः–

सतत् व निरन्तर विकास के अन्तर्गत निर्धारित गुणवतापूर्ण शिक्षा के लक्ष्यों में लैंगिक असमानता को समाप्त के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

शोध में प्रयुक्त विधिः–

प्रयुक्त शोध में प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शः–

अध्ययन शोध में दो बी.एड. महाविद्यालय में 240 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिसमें 30 प्रष्नों का समावेष किया गया है एवं उत्तरों के विकल्पों में हाँ व नहीं के दो विकल्प दिये गये है।

सांख्यिकीः–

इस प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी के रूप में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

उद्देष्य : सतत् व निरन्तर विकास के अन्तर्गत निर्धारित गुणवत्तापूर्ण षिक्षा के लक्ष्यों में लैंगिक असमानता के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

प्रशिक्षार्थियों	प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5	6	7
जागरूकता प्राप्तांक		112	97	93	83	96	96	95

कुल प्राप्तांक – 672

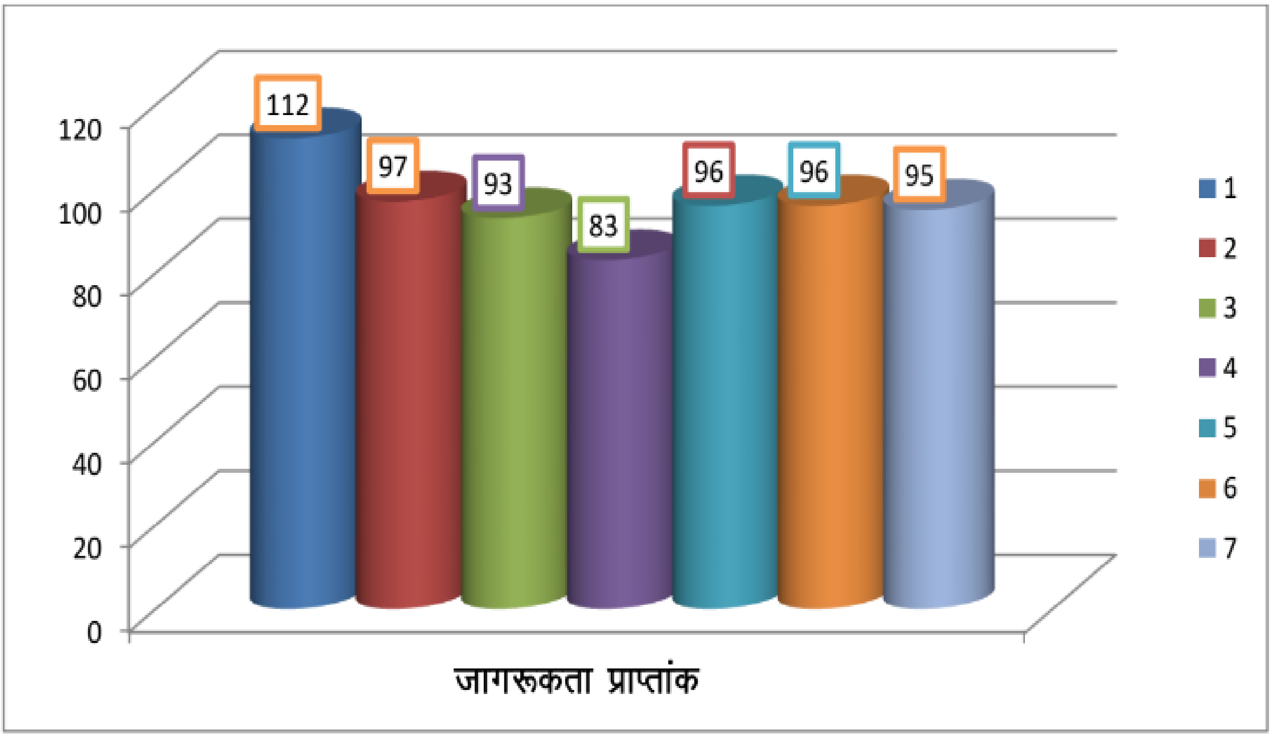

व्याख्या एवं विश्लेषण :–उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि सतत् एवं निरन्तर विकास के अन्तर्गत निर्धारित गुणवत्तापूर्ण षिक्षा में निहित लैंगिक असमानता के प्रति बी.एड. प्रषिक्षणार्थियों की जागरूकता का प्रतिषत 80 प्रतिषत है।

- प्रश्न 1 पर सर्वाधिक अंक (112) प्राप्त हुए हैंए जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रश्न के प्रति जागरूकता अधिक है।
- प्रश्न 4 पर सबसे कम अंक (83) प्राप्त हुए हैंए जिससे यह दर्शाता है कि इस प्रश्न के प्रति जागरूकता सबसे कम है।
- बाकी सभी प्रश्नों के अंक 90 के आसपास हैंए जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुल मिलाकर जागरूकता स्तर अच्छा है।

निष्कर्ष :–

यह अध्ययन यह दिखाता है कि सतत और निरंतर विकास के लक्ष्यों में लैंगिक असमानता के प्रति जागरूकता का स्तर विविध है। उच्चतम और निम्नतम अंकों के बीच का अंतर जागरूकता में अंतर को दर्शाता है। यह आवश्यक है कि कम अंकों वाले प्रश्नों पर विशेष ध्यान दिया जाए और जागरूकता बढ़ाने के प्रयास किए जाएं। इस प्रकार इस विश्लेषण से पता चलता है कि जागरूकता की दिशा में अभी भी सुधार की गुंजाइश है और विशेष रूप से उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है जहां जागरूकता कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अकरम, एम. (2007). पर्यावरण संबंधी चिंतायें और सतत विकासः विभिन्न दृष्टिकोण, विश्वविद्यालय समाचार,, 45 (44) 94.98.
- अग्रवाल, पी.कें.. (1996). भारत का टिकाऊ विकास की दिशा में कदम। एमडी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
- अमिनाद, जेडेड, अजीजी, एम, वहाब, एम, आर और नवावी, एम (2010). मलेशियाई विश्वविद्यालयों में ईरानी छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता और रवैया, 3,;1)]1.10.
- अय्यंगंगार, एस (2007) सतत विकास के लिए शिक्षा ईएसडी, सितंबर, 14–16 पर शैक्षिक अनुसंधान के लिए अखिल भारतीय एसोसिएशन के सम्मेलन का सारांश। गुजरात।
- अलागिरी, डी, औरैर कुमुमार, ई.एन. (2007). भारत में पर्यावरण के मुद्देरू एक परिचय. हैदराबादः इकफाई विश्वविद्यालय प्रेस।

वेब लिंक

- http:/www-ceeindia-org> 7 December] 2004
- http:/www-earthcharter-org > 5 December] 2004
- http:/www-esdtoolkit-org> 24 November] 2004
- http:/www-road-unep-org > 7 December] 2004
- http:/www-unesco-org > 8 December] 2004